

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भवभय दारुणं ॥
नवकंज-लोचन, कंजमुख, कर-कंज, पद कंजारुणं ॥
कंदर्प अर्गणित अमित छबि, नवनील-नीरज-सुंदरं ।
पट पीत मानहु तड़ित रुचि शुचि नौमि जनक सुतावरं ॥
भजु दीनबंधु दिनेश दानव-दैत्यवंश-निकंदनं ।
रघुनंद आनंदकंद कोशलचंद दशरथ-नंदनं ॥
सिर मुकुट कुंडल तिलक चारु उदार अंग विभूषणं ।
आजानुभुज शर-चाप-धर, संग्राम-जित-खरदूषणं ॥

इति वदति तुलसीदास शंकर शेष-मुनि-मन-रंजनं ।
मम हृदय-कंज निवास कुरु, कामादि खल-दल-गंजनं ॥
मनु जाहिं रचेउ मिलिहि सो बर सहज सुंदर साँवरो ।
करुना निघान सुजान सीलु सनेहु जानत रवरो ॥
एहि भाँति गौरि असीस सुनि सिय सहित हियै हखी अली ।
तुलसी भवनिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मंदिर चली ॥
सो — जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हरषु न जाइ कहि ।
मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे ॥

सियावर रामचन्द्रकी जय ॥

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भवभय दारुणं ॥
नवकंज-लोचन, कंजमुख, कर-कंज, पद कंजारुणं ॥
कंदर्प अर्गणित अमित छबि, नवनील-नीरज-सुंदरं ।
पट पीत मानहु तड़ित रुचि शुचि नौमि जनक सुतावरं ॥
भजु दीनबंधु दिनेश दानव-दैत्यवंश-निकंदनं ।
रघुनंद आनंदकंद कोशलचंद दशरथ-नंदनं ॥
सिर मुकुट कुंडल तिलक चारु उदार अंग विभूषणं ।
आजानुभुज शर-चाप-धर, संग्राम-जित-खरदूषणं ॥

इति वदति तुलसीदास शंकर शेष-मुनि-मन-रंजनं ।
मम हृदय-कंज निवास कुरु, कामादि खल-दल-गंजनं ॥
मनु जाहिं रचेउ मिलिहि सो बर सहज सुंदर साँवरो ।
करुना निघान सुजान सीलु सनेहु जानत रवरो ॥
एहि भाँति गौरि असीस सुनि सिय सहित हियै हखी अली ।
तुलसी भवनिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मंदिर चली ॥
सो — जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हरषु न जाइ कहि ।
मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे ॥

सियावर रामचन्द्रकी जय ॥

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भवभय दारुणं ॥
नवकंज-लोचन, कंजमुख, कर-कंज, पद कंजारुणं ॥
कंदर्प अर्गणित अमित छबि, नवनील-नीरज-सुंदरं ।
पट पीत मानहु तड़ित रुचि शुचि नौमि जनक सुतावरं ॥
भजु दीनबंधु दिनेश दानव-दैत्यवंश-निकंदनं ।
रघुनंद आनंदकंद कोशलचंद दशरथ-नंदनं ॥
सिर मुकुट कुंडल तिलक चारु उदार अंग विभूषणं ।
आजानुभुज शर-चाप-धर, संग्राम-जित-खरदूषणं ॥

इति वदति तुलसीदास शंकर शेष-मुनि-मन-रंजनं ।
मम हृदय-कंज निवास कुरु, कामादि खल-दल-गंजनं ॥
मनु जाहिं रचेउ मिलिहि सो बर सहज सुंदर साँवरो ।
करुना निघान सुजान सीलु सनेहु जानत रवरो ॥
एहि भाँति गौरि असीस सुनि सिय सहित हियै हखी अली ।
तुलसी भवनिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मंदिर चली ॥
सो — जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हरषु न जाइ कहि ।
मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे ॥

सियावर रामचन्द्रकी जय ॥

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भवभय दारुणं ॥
नवकंज-लोचन, कंजमुख, कर-कंज, पद कंजारुणं ॥
कंदर्प अर्गणित अमित छबि, नवनील-नीरज-सुंदरं ।
पट पीत मानहु तड़ित रुचि शुचि नौमि जनक सुतावरं ॥
भजु दीनबंधु दिनेश दानव-दैत्यवंश-निकंदनं ।
रघुनंद आनंदकंद कोशलचंद दशरथ-नंदनं ॥
सिर मुकुट कुंडल तिलक चारु उदार अंग विभूषणं ।
आजानुभुज शर-चाप-धर, संग्राम-जित-खरदूषणं ॥

इति वदति तुलसीदास शंकर शेष-मुनि-मन-रंजनं ।
मम हृदय-कंज निवास कुरु, कामादि खल-दल-गंजनं ॥
मनु जाहिं रचेउ मिलिहि सो बर सहज सुंदर साँवरो ।
करुना निघान सुजान सीलु सनेहु जानत रवरो ॥
एहि भाँति गौरि असीस सुनि सिय सहित हियै हखी अली ।
तुलसी भवनिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मंदिर चली ॥
सो — जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हरषु न जाइ कहि ।
मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे ॥

सियावर रामचन्द्रकी जय ॥